केस स्टडी (सफलता की कहानी) 2019–20

कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों में जल स्वच्छता एवं स्वच्छ व्यवहार के अनुपालन हेतु

प्रोजेक्ट प्रज्जवला

NSE Foundation

unicef for every child

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

WaterAid

भूमिका

राज्य शिक्षा केन्द्र एवं एन.एस.ई. फाउण्डेशन के सहयोग से वाटर एड इंडिया द्वारा मध्य प्रदेश के 207 कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालयो में जल स्वच्छता एवं स्वच्छ व्यवहार के अनुपालन हेतु प्रज्जवला कार्यक्रम का क्रियान्वयन किया जा रहा है।

कार्यक्रम का मुख्य उद्वेश्य कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय (के.जी.बी.वी.) की छात्राओं में जल स्वच्छता एवं स्वच्छ व्यवहार को मजबूती प्रदान करना, कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय में जल, स्व्चछता एवं स्वच्छ व्यवहार से जुड़े संसाधनों का नवीनीकरण कराना एवं संसाधनों के प्रबंधन एवं रखरखाव की व्यवस्था स्थापित करने में सहयोग प्रदान करना है।

कार्यक्रम का मुख्य हस्तक्षेप के.जी.बी.वी में जल, स्व्चछता एवं स्वच्छ व्यवहार से जुड़े संसाधनों का नवीनीकरण हेतु विस्तृत परियोजना प्रतिवेदन तैयार करना, जल स्वच्छता एवं स्वंच्छ व्यवहार को मजबूती प्रदान करने हेतु व्यवहार परिवर्तन रणनीति को लागू करना, जल स्वच्छता एवं स्वच्छ व्यवहार को मजबूती प्रदान करने हेतु के.जी.बी.वी की छात्राओं तथा प्रबंधन की क्षमतावृद्वि करना एवं के.जी.बी.वी में जल स्वच्छता एवं स्वच्छ व्यवहार से जुड़े संसाधनों के प्रबंधन एवं रखरखाव की व्यवस्था स्थापित करना।

कार्यक्रम के द्वितीय चरण में 19 जिलों कें 86 के.जी.बी.वी में माह अक्टूबर 2019 से महात्मा गांधी सेवा आश्रम, न्यूसिड, एवं आरम्भ संस्था द्वारा जल स्वच्छता से जुड़े व्यवहार परिवर्तन हेतु हस्तक्षेप प्रारम्भ किया। जल स्वच्छता से जुड़े व्यवहार परिवर्तन हेतु कार्यक्रम के अन्तर्गत 2 प्रशिक्षण माड्यूल, स्वच्छता प्रशिक्षण माड्यूल एवं माहवारी स्वच्छता प्रबंधन माड्यूल तैयार किये गये।

स्वच्छता प्रशिक्षण माड्यूल में सुरक्षित पेयजल स्त्रोत की पहचान, रखखाव एवं उपयोग, शौचालय का उपयोग एवं रखरखाव, हाथों की स्वच्छता, व्यक्तिगत स्वच्छता, ठोस एवं तरल कचरा प्रबंधन तथा मल से मुख तक के संक्रमण मार्ग एवं बीमारियां – एफ चार्ट पर 6 सत्र हैं।

इसी प्रकार माहवारी स्वच्छता प्रशिक्षण माड्यूल को भी 6 सत्रों– माहवारी के संबंध में मिथक एवं भ्रांतियां, किशोरावस्था में होने वाले शारीरिक परिवर्तन, माहवारी का उचित प्रबंधन, माहवारी स्वच्छता स्वास्थ्य एवं पोषण, कैसे करें सैनिटरी पैड या कपड़े का सुरक्षित निपटान तथा विद्यालयों में माहवारी स्वच्छता सम्बंधी व्यवस्थाएं में विभाजित किया गया है।

सभी के.जी.बी.वी. में दोनो प्रशिक्षण माड्यूल के सभी सत्रों का आयोजन किया जा चुका है। शैक्षणिक सत्रों के साथ सभी के.जी.बी.वी. में बाल संसद एवं किशोरी सहायता समूह का गठन कर उनकों के.जी.बी.वी. में स्वच्छता के अनुपालन हेतु नियमित सहयोग किया जा रहा है।

के.जी.बी.वी. की छात्राओं में जल स्वच्छता एवं स्वच्छ व्यवहार से जुड़ी जानकारी एवं व्यवहार अभ्यास में सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देने लगा है जिसे सफलता की काहनियों के रुप में संग्रहित किया गया है।

स्वच्छता के प्रति जागरुकता की पहल करती छात्रायें

सागर जिले के मालथौन विकासखण्ड के ग्राम बेसरा में स्थित कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय (के.जी.बी.वी.) में सहयोगी संस्था आरम्भ के सहयोग से कार्यक्रम की गतिविधियों का क्रियान्वयन माह अक्टूबर 2019 में प्रारम्भ किया। के.जी.बी.वी. मालथौन में व्यवहार परिवर्तन गतिविधियों के अन्तर्गत स्वच्छता के प्रति जागरुक करने हेतु स्वच्छता एवं माहवारी स्वच्छता पर शैक्षणिक सत्रों का आयोजन किया गया।

व्यवहार परिवर्तन हेतु आयोजित इन शैक्षणिक सत्रों से छात्राओं में न सिर्फ स्वच्छता के प्रति जागरुकता बड़ी बल्कि उसका उपयोग उन्होने अपनी दिनचर्या में भी शुरु कर लिया। इसी का एक उदाहरण है, कुमारी साक्षी पाल जो की कक्षा 7 की छात्रा है एवं किशोरी सहायता समूह की सदस्य है। यह समूह अन्य किशोरियों को स्वच्छता से जुड़े व्यवहार को अपनाने में मदद करने के लिये बनाया गया है।

शैक्षणिक सत्र सुरक्षित पेयजल स्त्रोत की पहचान, रखरखाव एवं उपयोग पर आयोजित सत्र के दौरान साक्षी ने सीखा कि पीने के पानी का शुद्व पेयजल स्त्रोत से लेना ही जरुरी नहीं बल्कि उसको उपयोग के समय भी शुद्व रहना जरुरी है। छुट्टियों के दौरान जब साक्षी अपने गांव पहुंची तो उसने देखा कि गांव के सभी लोग पानी लेने के हैण्डपम्प का उपयोग तो करते हैं, पर हैण्डपम्प से पानी ले जाने में कई बार पानी का बर्तन खुला ही रहता है। जिससे पानी के प्रदूषित होने का खतरा हो सकता है।

छुट्टियों के दौरान ही उसने देखा कि उसके गांव में एक फेरी वाला आता है जो प्लास्टिक एवं अन्य घरेलू सामान गांव में लाकर बेचता है। उसने फेरी वाले से कपड़े की छन्नी लाने के लिये कहा साथ ही गांव में अपने परिवार तथा अन्य महिलाओं को हैण्डपम्प से पानी

लाते समय ढककर लाने एवं कभी भी पीने के पानी में उंगलियों न डूबने के लिये भी प्रेरित किया, साथ ही को कपड़े की छन्नी का उपयोग पीने के पानी के बर्तन में पानी डालने पर छानने के लिये कहा।

महिलाओं को उसकी बात समझ में आई और जब अगली बार फेरी वाला कपड़े की छननी लेकर आया तो कई महिलाओं ने उससे वह छननी खरीदली, और पीने के पानी को उपयोग से पूर्व छानना प्रारम्भ कर दिया, साथ ही महिलाओं ने साक्षी की इस सलाह के लिये साक्षी को सराहा भी।

छुट्टियों के बाद साक्षी जब छात्रावास आई तो उसने अपनी इस पहल के बारे में छात्रावास में भी बताया जिसे छात्रावास में भी सबने सराहा, और अन्य छात्राओं ने इसे अपने गांव में भी अपनाने का निर्णय लिया। साक्षी का यह प्रयास बहुत ही छोटा प्रतीत हो सकता है, पर उसकी पहल करने की क्षमता निश्चित रुप से स्वच्छता के प्रति अपनी संगिनियों और परिवार के लोगों को जागरुक करने में मददगार होगी।

के.जी.बी.वी. में स्वच्छ व्यवहार के अनुपालन हेतु नेतृत्व लेती बाल संसद एवं किशोरी सहायता समूह

दमोह जिले के हटा विकासखण्ड के ग्राम रजपुरा में स्थित कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय (के.जी.बी.वी.) में सहयोगी संस्था न्यूसिड के सहयोग से कार्यक्रम की गतिविधियों का क्रियान्वयन माह अक्टूबर 2019 में प्रारम्भ किया। के.जी.बी.वी. दमोह (रजपुरा) में व्यवहार परिवर्तन गतिविधियों के अन्तर्गत स्वच्छता के प्रति जागरुक करने हेतु स्वच्छता एवं माहवारी स्वच्छता पर शैक्षणिक सत्रों का आयोजन किया गया। साथ ही के.जी.बी.वी. में बाल संसद एवं किशोरी सहायता समूह का गठन भी किया गया।

बाल संसद सदस्य जंहा छात्रावास में जंहा स्वच्छता से जुड़े व्यवहार को अपनाने हेतु निगरानी का काम करते हैं, वहीं किशोरी सहायता समूह सदस्य माहवारी स्वच्छता पर जागरुक एवं माहवारी प्रबंधन में सहयोग करने का कार्य कर रही है।

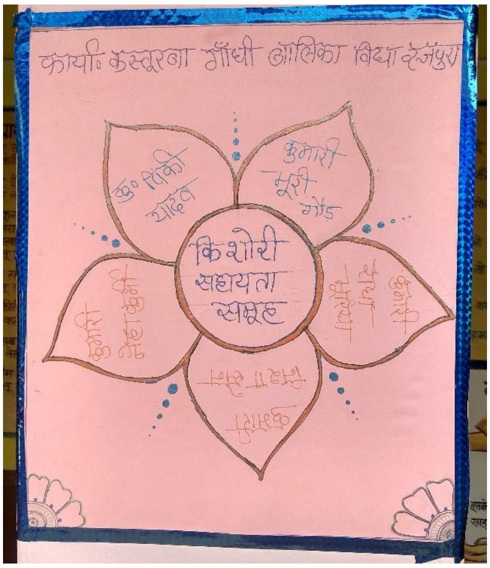

शैक्षणिक सत्रों के बाद बाल संसद एवं किशोरी सहायता समूह की पहल के कारण छात्राओं में स्वच्छता से जुड़े व्यवहार में परिवर्तन दिखने लगा है।

बाल संसद सदस्य प्रतिदिन यह सुनिश्चित करते हैं कि सभी छात्रायें खाने से पहले सही प्रकार से साबुन से हाथ धोंये। जिसके कारण खाने से पहले से साबुन से

सही प्रकार से हाथ धोना छात्राओं की दिनचर्या का हिस्सा बन गया है।

बाल संसद सदस्य यह भी सुनिश्चित करती हैं कि छात्रायें शौचालय का उपयोग सही प्रकार से करें, जिसके कारण सभी छात्राओं ने शौचालय के उपयोग के समय चप्पल पहनना आरम्भ कर दिया है, साथ ही शौचालय को स्वच्छ बनाये रखने के लिये शौच से पहले एवं शौच के बाद पानी डाल रही हैं। जिससे शौचालय की स्वच्छता में भी सुधार हुआ है।

किशोरी सहायता समूह सदस्य छोटी बच्चियों को माहवारी भ्रांतियों पर जागरुक करने का कार्य कर रहीं है, माहवारी भ्रांतियों पर जागरुक करने के लिये किशोरी समूह द्वारा विभिन्न पोस्टर तैयार किये हैं जिसके माध्यम से वह अन्य छात्राओं को जागरुक कर रही हैं।

माहवारी प्रबंधन के लिये बनाये गये गरिमा कक्ष की देखरेख भी किशोरी समूह सदस्य कर रही हैं, जिससे छात्राओं के माहवारी प्रबंधन आसान हुआ है। छात्राओं के स्वच्छता से जुड़े व्यवहार में आये इन बदलावों से वार्डन एवं सहायक वार्डन भी खुश दिखाई देती हैं,

माहवारी पर टूटती भ्रांतियां

सिंगरोली जिले के विकासखण्ड चितरंगी में स्थित कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालयों (के.जी.बी.वी.) में सहयोगी संस्था न्यूसिड के सहयोग से कार्यक्रम की गतिविधियों का क्रियान्वयन माह अक्टूबर 2019 में प्रारम्भ किया।

के.जी.बी.वी. में व्यवहार परिवर्तन गतिविधियों के अन्तर्गत स्वच्छता के प्रति जागरुक करने हेतु स्वच्छता एवं माहवारी स्वच्छता पर शैक्षणिक सत्रों का आयोजन किया गया। छात्रावास में पढ़ने वाली अधिकतर छात्रायें पिछड़े इलाकों से है, जंहा पर आज भी महिलायें एवं बालिकायें माहवारी से जुड़ी भ्रांतियों से जकड़ी हुई हैं।

माहवारी से जुड़ी भ्रांतियों पर लिये गये सत्र में छात्राओं ने माना कि माहवारी से जुड़ी भ्रांतिया जैसे माहवारी के दौरान रसोईघर में न जाना, किसी और को खाना न परोसना, पुरुष या लड़को को न छूना, खेल कूद व अन्य गतिविधियों में भाग न लेना, पेड़ पौधों आचार पापड़ को न छूना, पूजा न करना इत्यादि को पालन करने के लिये हमें शुरुवात से ही कहा जाता है, जिसके कारण हम इन मान्यताओं को मानते हैं।

सत्र के दौरान छात्राओं को माहवारी के बारे में भ्रांतियां एवं वैज्ञानिक सत्यता के बारे में उदाहरणों के माध्यम से एनिमेटर कंचन यादव द्वारा समझाया गया, एवं छात्राओं ने भी इन भ्रांतियों को न मानने की बात कही।

एनिमेटर द्वारा के.जी.बी.वी. चितरंगी में भ्रमण के दौरान पता चला कि कुछ छात्रायें माहवारी से जुड़ी हुई भ्रांतियों खासकर माहवारी के दौरान भोजन परोसने को लेकर अभी भी आत्मविश्वास नहीं दिखा पा रही हैं, छात्राओं ने चर्चा के दौरान एनिमेटर को बताया कि उन्हें बताया गया है कि यदि माहवारी के दौरान आप किसी को भोजन परोसते हो तो खाने वाले के मूंह में छाले हो जाते है। एनिमेटर द्वारा उन छात्राओं को इस बारे में समझाया गया कि ऐसा कुछ नहीं होता। इस पर किशोरी समूह की सदस्यों द्वारा बिना किसी को बताये इस बात का परीक्षण करने का निर्णय लिया।

एनिमेटर की अगले भ्रमण पर एक छात्रा जो उस समय माहवारी चक्र से गुजर रही थी उसने एनिमेटर को बताये बिना छात्रावास में बने खाना परोसकर खाने के लिये कहा। एनिमेटर को इस बारे में कोई जानकारी नहीं थी और उसने छात्रा द्वारा परोसा खाना खा लिया।

अगली बार जब एनिमेटर ने पुनः के.जी.बी.वी. का भ्रमण किया तो सभी छात्राओं ने एनिमेटर से उसके स्वास्थ्य के बारे में पूछा और उसे इस बारे में बताया।

एनिमेटर ने छात्राओं को बताया कि मुझे तो कुछ नहीं हुआ, साथ ही उसने छात्राओं को कहा अच्छा है कि आप लोगों ने मुझे बिना बताये मेरे ऊपर इसको टेस्ट किया यदि आप मुझे बताती तब भी मैं खाना खा लेती क्योंकि मैं इस बात का नही मानती हूं, पर शायद आप लोगों को लगता कि मैं झूठ बोल रही हूं।

अब आप बताओ कि माहवारी के समय खाना परोसना चाहिये कि नहीं, इस पर सभी छात्राओं ने कहा कि माहवारी के समय खाना परोस भी सकते हैं, और बना भी सकते हैं, आज के बाद हम माहवारी से जुड़ी इस भ्रांती को नहीं मानेंगे।

इस प्रकार किशोरियों की माहवारी भ्रांतियों पर जो आस्था थी वो टूट गई एवं अब वह माहवारी से जुड़ी अन्य भ्रांतियों को भी न मानने की बात कहने लगी हैं।

छात्राओं के स्वच्छता से जुड़े व्यवहार में आया बदलाव

टीकमगढ़ जिले के विकासखण्ड पृथवीपुर के ग्राम मढ़िया में स्थित कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालयों (के.जी.बी.वी.) में सहयोगी संस्था महात्मा गांधी सेवा अश्रम के सहयोग से कार्यक्रम की गतिविधियों का क्रियान्वयन माह अक्टूबर 2019 में प्रारम्भ किया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में जब एनिमेटर द्वारा के.जी.बी.वी. का भ्रमण किया तो पाया कि के.जी.बी.वी. में छात्राओं की स्वच्छता से जुड़े व्यवहार की स्थिति अच्छी नहीं है, छात्रावास के कमरों के बाहर कचड़ा पड़ा रहता है, अधिकतर बच्चियों को हाथ धोने के सही चरणों के बारे में जानकारी नहीं है।

कई बालिकाओं को शौचालय में सही प्रकार से बैठना भी नही पता है, तथा शौच के बाद शौचालय में सही प्रकार से पानी न डालने के कारण शौचालय भी हमेशा गन्दे दिखाई देते है। छात्रायें पेशाब के लिये स्नानघर का इस्तेमाल करतीं और उपयोग के बाद पानी भी नहीं डालतीं जिसके कारण स्नानघर में भी बदबू बनी रहती।

पीने के पानी लेने के सही तरीके के बारे में छात्राओं में भी छात्राओं को जानकारी नहीं हैं, वार्डन एवं सहायक वार्डन बड़ी बच्चियों जो माहवारी चक्र से गुजर रही हैं उनसे काफी परेशान रहती क्योंकि छात्रायें उपयोग के बाद सेनेटरी पेड या कपड़ा खिड़की के बाहर या खुले में ही फेंक देती हैं।

के.जी.बी.वी. मढ़िया में स्वच्छता एवं एवं माहवारी स्वच्छता माड्यूल के सभी 6 – 6 शैक्षणिक सत्रों विभिन्न खेल एवं गतिविधियों के माध्यम पूरे किये जा चुके हैं, साथ ही बाल संसद एवं किशोरी सहायता समूह का गठन भी किया जा चुका है।

के.जी.बी.वी. मढ़िया में स्वच्छता से जुड़े व्यवहार में बदलाव देखने को ही मिलता है, छात्राओं ने वार्डन एवं सहायक वार्डन के सहयोग से हर कक्ष के सामने एक डस्टबिन रखना है जिसमें कक्ष से निकलने वाला सूखा कचड़ा उसी में डाला जाता है, साथ गीले कचड़े के लिये खाना खाने के स्थान पर एक अलग डस्टबिन रखा है जिसमें बचा हुआ खाना व फल सब्जियों के छिलके डाले जातें हैं।

खाना खाने एवं शौच के बाद सभी छात्राओं ने साबुन से हाथ धोना प्रारम्भ कर दिया है, SUMANK मंत्र छात्राओं को हाथ धोने के सही तरीके की याद दिलाता रहता है।

सहायक वार्डन श्रीमति अर्चना सर्वैया जी के अनुसार संगीत शौचालय खेल के माध्यम से बालिकाओं ने शौचालय के उपयोग एवं रखरखाव को बड़े अच्छे से समझा है और उसी प्रकार शौचालय का उपयोग भी करती हैं, छोटी बच्चियों ने शौचालय में सही प्रकार से बैठना सीख लिया है, शौचालय में किसी छात्रा के होने पर वह इंतजार करती है, पेशाब के लिये स्नानघर का उपयोग नहीं करती, सभी छात्रायें पेशाब के लिये शौचालय का उपयोग करती हैं। शौचालय के उपयोग के समय हमेशा चप्पल पहनती हैं, एवं शौच से पहले एवं उपयोग के बाद पानी भी डालती हैं जिसके कारण शौचालय भी साफ रहने लगे हैं।

सेनेटरी पेड व कपड़े को डस्टबिन में ही डालती हैं, जिसके कारण के.जी.बी.वी. परिसर में भी सफाई दिखने लगी है, साथ ही माहवारी विषय पर भी छात्रायें आपस में तथा वार्डन व सहायक वार्डन से खुलकर बात करने लगी है।

माहवारी प्रबंधन पर सजग हुई छात्रायें

श्योपुर जिले के विकासखण्ड में स्थित कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालयों (के.जी.बी.वी.) में सहयोगी संस्था महात्मा गांधी सेवा अश्रम के सहयोग से कार्यक्रम की गतिविधियों का क्रियान्वयन माह अक्टूबर 2019 में प्रारम्भ किया।

कराहल विकासखण्ड मध्य प्रदेश के सबसे पिछड़े विकासखण्डों में से एक है, जंहा आज शिक्षा के साथ – साथ स्वच्छता के प्रति अधिक जागरुकता देखने को नहीं मिलती।

के.जी.बी.वी. कराहल में स्वच्छता एवं माहवारी स्वच्छता से जुड़े प्रशिक्षण माड्यूल के सभी 6 – 6 शैक्षणिक सत्रों का आयोजन किया गया। माहवारी पर आयोजित शैक्षणिक सत्रों के दौरान एनिमेटर द्वारा माहवारी स्वच्छता सम्बंधी जानकारी एवं प्रबंधन से जुड़े अभ्यास के बारे में छात्राओं से जब चर्चा की तो इस विषय पर अधिकतर छात्राओं को इस विषय पर अधिक जानकारी नहीं थी। जिन छात्राओं का माहवारी चक्र प्रारम्भ हो चुका था वह भी इस विषय पर सहायक वार्डन तक से खुलकर बात नहीं करती थीं।

माहवारी प्रबंधन पर आयोजित सत्र के दौरान एनिमेटर द्वारा छात्राओं से पूछा गया कि जब उनको स्कूल में रक्त स्त्राव होता है तो उन्हें कैसा महसूस होता है और वह इसका प्रबंधन कैसे करती हैं, तो छात्राओं ने बताया कि उन्हें बहुत शर्मिंदगी होती जिससे बचने के लिये वह बिना किसी को बताये सीधे के.जी.बी.वी. आ जाती यदि साथ में कोई सहेली होती है तो वह सहायक वार्डन से पेड लाकर दे– देती और यदि सहेली नहीं होती तो पुराने कपड़ों का ही उपयोग कर लेते हैं।

एनिमेटर द्वारा छात्राओं से चर्चा की यदि हमें माहवारी में पेड की जरुरत है तो हम स्वयं सहायक वार्डन से सेनेटरी पेड क्यों नहीं मांग सकते। जिस पर अधिकतर छात्राओं ने शर्मिंदगी के कारण स्वयं पेड न लाने के बात कही। एनिमेटर ने छात्राओं को समझाया माहवारी में शर्मिंदगी की बात नहीं जब आपकी सहेली सहायक वार्डन से सेनेटरी पेड मांगती है तब भी तो आपका नाम लेकर ही मांगती है, तो क्यों न हम माहवारी का प्रबंधन इस प्रकार करें कि हमें किसी के सामने शर्मिंदा ही न होना पड़े।

एनिमेटर ने सत्र के दौरान छात्राओं को बताया कि माहवारी शर्म की बात नहीं है, सभी महिलायें इस प्रक्रिया से गुजरती हैं, माहवारी के दौरान आप कपड़ा भी उपयोग कर सकती हो पर वह सुती व साफ होना चाहिये। यदि हम शर्म के कारण इसका सही प्रबंधन नहीं करेंगे तो इससे हमारा प्रजनन स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

सत्र के दौरान छात्राओं ने सीखा कैसे वह अपने अगले आने वाले पीरियड का अनुमान लगा सकतीं है, तथा उस दौरान जब भी वह के.जी.बी.वी. वह घर से बाहर जायें तो उनके पास सेनेटरी पेड होना चाहिये जिससे किसी भी प्रकार की असुविधा व शर्मिंदगी से बच सकें।

अधिकतर छात्राओं माहवारी प्रबंधन को लेकर सजग हैं, अब माहवारी पर वह खुलकर बात करती है, तथा उनके बेग में माहवारी चक्र के समय सेनेटरी पेड या साफ कपड़ा रहता है, आवश्यकता पड़ने पर वह स्वयं मां या सहायक वार्डन से बिना झिझक के कपड़ा या सेनेटरी पेड मांग लेती है।

किशोरी सहायता समूह और बाल संसद ने के.जी.बी.वी. में स्वच्छ व्यवहार का अनुपालन किया आसान

दमोह जिले के भटियागढ़ विकासखण्ड के ग्राम खड़ेरी में स्थित कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय (के.जी.बी.वी.) में सहयोगी संस्था न्यूसिड के सहयोग से कार्यक्रम की गतिविधियों का क्रियान्वयन माह अक्टूबर 2019 में प्रारम्भ किया।

स्वच्छता एवं माहवारी स्वच्छता शैक्षणिक माड्यूल के माध्यम से छात्राओं ने स्वच्छता के महत्व को न सिर्फ समझा है बल्कि उसका व्यवहार में पालन भी शुरु कर दिया है। स्वच्छता से जुड़े व्यवहार के अनुपालन में किशोरी सहायता समूह एवं बाल संसद सदस्यों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही है। बाल संसद सदस्य के.जी.बी.वी. की छात्राओं में व्यक्तिगत स्वच्छता से जुड़े व्यवहार के अनुपालन हेतु न सिर्फ निगरानी कर रहीं हैं, बल्कि स्वच्छता से जुड़े अधोसरंचना के रखरखाव एवं उसके सही उपयोग के लिये भी छात्राओं को प्रोत्साहित कर रही हैं, जिसका परिणाम छात्राओं के स्वच्छता से जुड़े व्यवहारों में साफ दिखाई देने लगा है।

सभी छात्रायें नियमित रुप से स्नान करती हैं, साप्ताहिक रुप से नाखून काटती हैं, तथा अपने कपड़ों को धोने के बाद व्यवस्थित रख रही है, बाल संसद क सदस्य यह सुनिश्चित करती हैं कि सभी छात्रायें खाना खाने से पहले सही चरणों में साबुन से हाथ धोयें।

छात्राओं में माहवारी के प्रति जागरुकता में भी अंतर आया है, छात्रायें माहवारी पर खुलकर बात करने लगी हैं, किशोरी सहायता समूह सदस्य माहवारी प्रबंधन के लिये बनाये गरिमा कक्ष की देख रेख करती हैं। माहवारी से जुड़ी भ्रांतियों को दूर करने तथा बेहतर माहवारी प्रबंधन हेतु किशोरी सहायता समूह ने स्वयं एक नुक्कड़ नाटक तैयार किया, जिसे के.जी.बी.वी. के वार्षिक उत्सव में उन्होंनें प्रदर्शित भी किया।

किशोरी सहायता समूह एवं बाल संसद सदस्यों ने अन्य छात्राओं को स्वच्छता के प्रति जागरुक करने के लिये स्वच्छता सम्बंधी व्यवहार पर कई चार्ट पेपर तैयार किये है। जिनका उपयोग वह अन्य छात्राओं के साथ चर्चा में करती हैं।

के.जी.बी.वी. की छात्राओं में स्वच्छता से जुड़े व्यवहार में आये बदलाव में वार्डन एवं सहायक वार्डन का सहयोग भी महत्वपूर्ण रहा है।

वार्डन श्रीमती नंदनी गौतम बताती हैं, कि के.जी.बी.वी. में पहले भी छात्राओं के साथ स्वच्छता को पर चर्चा होती थीं, परन्तु गतिविधियों और खेल के माध्यम से छात्राओं के साथ जो नियमित सत्र लिये गये उससे छात्राओं में स्वच्छता के प्रति समझ बनी है, जिसका परिणाम स्वच्छता उनके व्यवहार में दिखाई देता है।

गरिमा कक्ष से माहवारी प्रबंधन हुआ आसान

दमोह जिले के जबेरा विकासखण्ड के ग्राम कुसमी मानगढ़ में स्थित कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय (के.जी.बी.वी.) में सहयोगी संस्था न्यूसिड के सहयोग से कार्यक्रम की गतिविधियों का क्रियान्वयन माह अक्टूबर 2019 में प्रारम्भ किया।

के.जी.बी.वी. में स्वच्छता पर व्यवहार परिवर्तन हेतु तैयार किये स्वच्छता एवं माहवारी स्वच्छता प्रशिक्षण माड्यूल के सभी शैक्षणिक सत्रों का आयोजन किया गया। साथ ही के.जी.बी.वी. में स्वच्छता से जुड़े व्यवहार के अनुपालन हेतु साथी शिक्षण को बढ़ावा देने हेतु बाल संसद एवं किशोरी सहायता समूह का गठन किया गया।

माहवारी स्वच्छता पर आयोजित अंतिम सत्र ''के.जी.बी.वी. में माहवारी प्रबंधन से जुड़ी व्यववस्थाओं'' के दौरान यह तय किया कि के.जी.बी.वी. में माहवारी प्रबंधन के लिये एक निश्चित स्थान होना चाहिये, जंहा महावारी प्रबंधन के लिये जरुरी संसाधन उपलब्ध हों।

सत्र के बाद किशोरी सहायता सदस्यों ने के.जी.बी.वी. के स्नानघरों को गरिमा कक्ष बनाने के लिये चयनित किया, जिससे कि माहवारी चक्र के दौरान किशोरियां प्रबंधन आसानी से कर सकें।

सहयोगी संस्था न्यूसिड द्वारा स्वच्छता से जुड़े संसाधनों के नवीनीकरण के दौरान यह ध्यान रखा कि गरिमा कक्ष के लिये आवश्यक साधन जैसे कपड़े टांगने के लिये खूंटी, साबुन रखने के लिये साबुनदानी आदि उपलब्ध हो।

छात्राओं ने गरिमा कक्ष में पेपर एवं ढक्कन वाला डस्टबिन रखा जिससे कि उपयोग के बाद सेनेटरी पेड और माहवारी कपड़े का उचित निपटान किया जा सके। साथ ही दोनों गरिमा कक्ष में पानी एवं साबुन की व्यवस्था भी की।

किशोरी सहायता समूह सदस्य यह सुनिश्चित करती हैं, कि गरिमा कक्ष की नियमित सफाई हो एवं डस्टबिन से सेनेटरी पेड को एकत्रित कर उचित स्थान पर सफाई कर्मी द्वारा जलाकर उसका निपटान किया जाये।

के.जी.बी.वी. की वह सभी छात्रायें जो माहवारी प्रक्रिया से गुजर रही हैं तथा वार्डन एवं सहायक वार्डन के.जी.बी.वी. में गरिमा कक्ष बनने से बहुत प्रसन्न है, छात्राओं का कहना है कि गरिमा कक्ष बनने से अब हम आसानी से माहवारी प्रबंधन कर पाते हैं, तथा अन्य छात्राओं को इससे किसी प्रकार की तकलीफ भी नहीं होती।

वार्डन एवं सहायक वार्डन सेनेटरी पेड एवं कपड़े के एक निश्चित डस्टबिन में डाले जाने से प्रसन्न हैं, अब के.जी.बी.वी. परिसर में सेनेटरी पेड इधर – उधर नहीं पड़े रहते तथा सफाई कर्मी को भी पता रहता है कि किस डस्टबिन से उसे सेनेटरी पेड ले जाकर जलाना है।

Partner NGOs:

AARAMBH

NATIONAL INSTITUTE OF WOMEN CHILD & YOUTH DEVELOPMENT

In the midst of
Death life Persists
In the Midst of
Untruth Truth Persists
in the Midst of
Darkness light persists